श्री प्राणनाथ की पहिचान

[प्रवचन प्रतियोगिता – उत्तम श्रेणी]

लेखक - श्री संदीप फाजिलका

इस नाबूद दुनियाँ में आज अनेकों धर्म हैं। हर धर्म का परमात्मा भी जुदा जुदा है, जुदे-जुदे रस्मों रिवाज हैं। कर्मकाण्ड और शरीयत में फसी है दुनियां। कहते तो सब हैं कि परमात्मा एक है पर हकीकत में कोई जानता नहीं कि वह कौन है, उसका नाम क्या है, उसका स्वरूप क्या है। यह ज्ञान तो केवल पराशक्ति तारतम ज्ञान के बिना प्राप्त हो नहीं सकता। गीता में अपराशक्ति और पराशक्ति का ज्ञान स्पष्ट है और पराशक्ति के बिना मुक्ति की प्राप्ति व सब के एक परमात्मा की प्राप्ति हो नहीं सकती।

आदरणीय सुन्दर साथ जी - जो सतयुग से लेकर सब धर्म ग्रंथों में लिखा था सत - चित आनन्द पर दुनियां जिस दुख की माया में ढूढ़ती रही वहाँ कहाँ से मिलता वह। निरंकार कह कह कर थक गई दुनिया पर आगे चलने की शक्ति है नहीं। पहले तो इसमें लदुन्नी तारतम ज्ञान के बिना दुनिया सूनी थी - वीरान थी। सभी धर्मों के ग्रंथों में लिख तो दिया गया कि वह एक परमात्मा अल्ला ताला इस दुनिया में आवेगा। वाईबल में लिखा गया Christ Will Come Again। वेदों ने कहा

"वेदें कह्या आवसी बुद्ध इश्वरों का ईश"

जिस के लिए राम भगवान ने कहा कि वह एक परमात्मा कलयुग में आयेगा, जो भी उस के नाम का सुमरिन करेगा वह जनम मरन के बन्धनों से छुटकारा प्राप्त करेगा।

कलयुग केवल नाम अधारा
सुमर सुमर नर उतरे पारा

सभी धर्म ग्रंथों में तो भविष्य वाणियाँ लिखी थीं कि वह परमात्मा दूनिया में आवेगा।

कुरानः- में फरदा रोज, कल का दिन यानि ग्यारवीं सदी, हिन्दु ग्रंथों में:- साका साल वाहन की सोलह सदी पूरी होने पर, वाईबल में :- ईसा ने अपनी लाइफ की आधी सदियाँ बीतने पर यानि सतारवहीं सदी में उस पार ब्रह्म परमात्मा आखरुल जमां इमाम मेंहन्दी Second Christ आवेगा, ऐसा लिखा है।

गुरु नानक देव जी ने कहा :-

बीतेगा उनतालीसा, दगेगा चालीसा
होसी मर्द मर्द का चेला, नानक सोई ओह
वेला दिखाई होसी सत-सत दी वेला

कबीर जी ने कहा :-

बीतेगा पांच हजार पाचां
आवेगा पार ब्रह्म सांचा

लिखा है, लिखा है कहती है दुनिया पर वह समय तो बीते चार सौ साल हो गये हैं तो वह कौन है? कहां है ? किस मजहब में है। कहां है वह ब्रह्म

Nijanand App

मुनियों की जमात, कहां है वह Choosen persons जिन के बीच में खुदा ने आना था। और उनके दिल को अर्श, परम धाम बना कर बैठना था। कभी हमने विचार करने का कष्ट किया ? नहीं तो आइये विचारें :-

मारवाड़ देश में श्री मन्त मेहता के घर एक बालक ने जनम लिया जिसका नाम देव चन्द रखा गया। देवचन्द्र जी बचपन से ही देवी मन्दिर जाते थे। उन्होंने काहन जी भट्ट नाम के पुरोहित से १४ वर्ष तक श्री मद् भागवत की कथा सुनी परन्तु उस एक परमात्मा का कुछ पता नहीं चला। उनकी खोज, लगन व विश्वास के कारण स्वयं श्री राजजी ने आ कर दीदार दिया और सारा ज्ञान बताया कि अब हमारा ठिकाना तुम्हारा दिल है। तुम शेष सभी अगंनाओं को जगाओ तब ही हम परमधाम वापस जा सकेंगे। श्री देव चन्द्र जी ने सब से पहले गांग जी भाईको सारा ज्ञान बताया और फिर जागनी का काम शुरू हो गया।

जामनगर के दीवान श्री केशव राय के पुत्र श्री गोवर्धन ठाकुर भी चर्चा सुनने आया करते थे। महराज ठाकुर उनके छोटे भाई थे। जब महराज ठाकुर चर्चा सुनने के लिये आंय तो श्री देवचन्द्र जी ने पहचान लिया कि इनके अन्दर तो परमधाम की इन्द्रावती की वासना है भविष्य पुराण में लिखा है कि किलकिला नदी के किनारे पदमावती पुरी (पन्ना) नाम का गाँव विन्ध्याचल पर्वत पर है वही इन्द्रावती नाम की देवी कलियुग में आयेगी
वाणी में भी लिखा है :-

इन्द्रावती को मैं अंगे-संगे इन्द्रावती मेरो अंग
तो फिर पहचान किसकी ?

जब श्रीदेवचन्द्र जी ७४ वर्ष के हो गये तो उनके शरीर छोड़ने का समय आ गया था। तब उन्होंने महराज ठाकुर को अपने पास बुलाया और २२ दिन तक ब्रज, रास और जागनी, क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के भेद बताय, कुरान व पुरान की गूढ़ बातें समझाई और कहा कि ब्रह्म सखियों में दो सखियां राजबंश में आई हैं उन दोनों की जागनी तुम्हारे द्वारा होगी, जब तक वह दोनों नहीं जाग जातीं तब तक कोई भी परमधाम नहीं जा सकेगा और कहा कि इस नश्वर शरीर को छोड़ने के बाद हमारा ठिकाना तुम्हारा दिल होगा। अत सम्बत १७१२ 'श्रावण' सुद १४ को देवचन्द्र जीः ने अपनी देह छोड़ दी। महराज ठाकुर जिनके अन्दर ईन्द्रावती की वासना थी में श्री राजजी और श्यामा जी ने प्रवेश किया और तब वह बन गये महामति श्री प्राण नाथ।

स्वामी जी जगनी का काम जूनागढ़ मसकत बन्दर ठठ्ठा नगर, पोरबन्दर, आवासी, नलिया, खम्भालिया, इत्यादि गाँव –गाँव व नगर - नगर जागनी का कार्य करते रहे।

कुरान में मुहम्मद साहब की बातें ग्रन्थ साहिब में गुरु नानक देव और सिक्ख पन्थ की बातें रामायण में भगवान की लीला और बाईबल में ईसा मसीह के बारे में लिखा है। जितने भी पोर –पैगम्बर या अवतार हुये सब ने अपने अपने धर्म और अपनी कौम को बडा कहा किसी ने भी सब धर्मों को एक करके, उस एक परमात्मा की पहचान नहीं करवाई लेकिन श्री प्राण नाथ जी ने और उनकी वाणी आकर
१- हिन्दु मुसलिम के झगड़ों को मिटा कर एक मानवधर्म श्री निजानन्द सम्प्रदाय की नीव रखी।
२- सब धर्मों की अनेकता में एकता का ज्ञानदेकर

Nijanand App

हकीकत में परमात्मा, उत्तम पुरुष की पहचान कराई,

३- ऊँच नीच, जात-पात, रंग भेद जो वजूद से लगे हैं और मानव को मानव का शत्रु बना देते हैं को मिटाने का ज्ञान दिया और बताया कि इन्सान वजूद से जुदा है पर आत्मा सब की एक है, और सोई खुदा-सोई ब्रह्म का नारा बुलन्द किया।

४- शरीयत, कर्म काण्ड, दिखावे और मान की चाहना रखने वाली बन्दगी खुदा से दूर करती है और आत्मा की, रूह की छिपी बन्दगी खुदा के पास पहुँचाती है — ऐसा ज्ञान दिया।

श्री लालदास जी, छत्रसाल जी और मोमनों ने तो पहचाना कि हमारे धाम के धनी ही हैं पर दूसरे धर्म वालों ने कब पहचाना।

१७३५ में सब धर्मों के धर्माचार्यों के साथ कुम्भ के मेले पर हरिद्वार में उस पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान का जो शास्त्रार्थ हुआ उसमें ४ वेद, ६ दर्शन, १० नाम सन्यास मत वालों के थे। सबने स्वीकार किया कि हकीकत में उन्हें परमात्मा की जानकारी नहीं है इसीलिये वे- स्वामी जी के किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके और स्वामी जी ने उन सब प्रश्नों का उत्तर उन्हीं के ग्रंथों के प्रमाणों से परमात्मा अद्वैत की पहचान करवाई कि कलयुग में वह स्वयं बुद्ध निष्कलंक अवतार है। सब ने माना और १७३५ में उन्हें बुद्ध निष्कलंक अवतार घोषित किया गया और पंजे वाले की ध्वजा लहराई गई।

इस के बाद १७३६ में औरंगजेब के दरबार में उस के काजियों के साथ, औरंगाबाद के बाद शाह भावसिंह के दरबार में मौलवियों के साथ तथा छत्रसाल जी के दरबार में महोबा के सब से बड़े काजी अब्दुल रसूल के साथ पाक, कुरान के अलफ, लाम, मीम और वह शब्दे मुक्तात जो कुरान में लिखा है कि इनके मायने अल्लाह ताला के बिना कोई खोल नहीं सकता! इनका अर्थ खोलने वाला खुद खुदा, आखरी जमाने का खाविन्द अल्लाह ताला ही होगा, सविस्तार चर्चायें हुईं और इन प्रमाणों के साथ १७ वीं शताब्दी में हिन्दु मुसलमानों ने स्वीकार किया कि हिन्दुओं में पारब्रह्म, मुसलमानों के इमाम मेहन्दी श्री प्राणनाथ जी ही हैं।

अंत में मैं यही कहूँगा कि प्राण नाथ किसी व्यक्ति या गुरु का नाम नहीं, जैसा कि वाणी में लिखा है :-

प्राण नाथ निज मूल पति

सनातत धर्म वाले भी यही कहते हैं :-

तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति

और गुरु नानक देव जी कहते हैं :-

ब्रह्म ज्ञानी की शोभा ब्रह्म ज्ञानी बनी

नानक ब्रह्म ज्ञानी है सब का धनी

अतः ब्रह्म ज्ञान की शोभा श्री प्राण नाथ जी और वह ही सब के धनी हैं।

Nijanand App